# कुलपति सम्मेलन में भारत के राष्ट्रपति, श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा प्रारंभिक उद्बोधन

**राष्ट्रपति भवन : 04.02.2015**

श्रीमती स्मृति ज़ुबिन ईरानी, मानव संसाधन  वकास मंत्री,
श्री सत्यनारायण मोहंती, स चव, उच्च  शक्षा  वभाग,
प्रो. वेद प्रकाश, अध्यक्ष,  वश्व वद्यालय अनुदान आयोग,
केंद्रीय  वश्व वद्यालयों के कुलपतिगण,
वरिष्ठ अ धकारीगण,
दे वयो और सज्जनो,
नमस्कार,

मैं इस सम्मेलन में आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूं। हम तीसरी बार राष्ट्रपति भवन में  मल रहे हैं और मुझे उम्मीद है  क हमारा  वचार- वमर्श पूर्व दो अवसरों की भांति सघन और सार्थक रहेगा।

1. मैं समझता हूं  क मानव संसाधन  वकास मंत्री, श्रीमती स्मृति ज़ुबिन ईरानी ने  सतम्बर, 2014 में चंडीगढ़ में केंद्रीय  वश्व वद्यालयों के कुलपतियों से बैठक की थी। मानव संसाधन  वकास मंत्रालय ने भी गत वर्ष के सम्मेलन की  सफारिशों पर की गई कार्रवाई की समीक्षा की है तथा इन दोनों घटनाक्रमों ने आज के सम्मेलन की भू मका तैयार की है।

मत्रो,

कुलपतियों के  वगत सम्मेलन में, हमने अनेक निर्णय  लए। मुझे जहां आज उत्तरार्द्ध में की गई कार्रवाई संबंधी  वस्तृत ब्योरे की प्रतीक्षा है, इन कार्य बिन्दुओं पर की गई प्रगति पर एक नज़र डालने से एक निराशाजनक तस्वीर उभरती है। रिक्त पदों का प्रतिशत  चंताजनक रूप से ऊंचा है, ये  रिक्तियां 31 मार्च,  2013 की  स्थिति  के  अनुसार 37.3 प्रतिशत  से  बढ़कर 1 दिसंबर, 2014 को 38.4 प्रतिशत हो गई है। नवान्वेषण क्लब और प्रेरित अध्यापक नेटवर्क की स्थापना के सम्बंध में प्रदर्शन आं शक रूप से बेहतर है। तथा प, केवल चार  वश्व वद्यालयों ने उत्कृष्टता केंद्र स्था पत  कए हैं जब क अन्य पांच इस दिशा में प्रयासरत हैं। केंद्रीय  वश्व वद्यालयों को उद्योगों और पूर्व छात्रों के साथ संपर्क की दिशा में प्रयासों पर मौजूदा से और अ धक ध्यान दिए जाने तथा दिशा प्रदान  कए जाने की जरूरत है।

3. मैं चाहता हूं क इस सम्मेलन के दौरान, आप वगत वर्ष की सफारिशों के कार्यान्वयन में सफलताओं, वफलताओं और कठिनाइयों पर पर्याप्त वचार और प्रयास करें। सम्मेलन के संशो धत प्रारूप से आप सामूहिक रूप से कठिनाइयों की पहचान कर सकेंगे तथा इन्हें दूर करने की सहयोगात्मक कार्यनीतियां तैयार कर सकेंगे।

मत्रो,

4. पछले दो वर्षों के दौरान,मैं इन सम्मेलनों में लए गए निर्णयों की दृढ़तापूर्वक अनुवर्ती कार्रवाई पर जोर देता रहा हूं। वगत वर्ष मैंने जो वायदे कए थे, उन्हें पूरा करने के गंभीर प्रयास कए गए हैं। संकाय की चयन स मति में कुला धपति के ना मती की अनुपलब्धता के मुद्दे का समाधान कर दिया गया है। मेरे अनुमोदन के बाद प्रत्येक केंद्रीय वश्व वद्यालय के पास अब पांच ना मतों का पैनल होगा जिन्हें वर्तमान अनुदेशों के अनुसार बुलाया जा सकता है।

5. संकाय की कमी को दूर करने के एक अल्पका लक उपाय के तौर पर पछले सम्मेलन में देश और वदेश के प्रख्यात वद्वानों और अनुसंधानकर्ताओं की नियुक्ति का सुझाव दिया गया था। नॉर्वे और फनलैंड की मेरी यात्रा के दौरान, जिसमें केंद्रीय वश्व वद्यालयों, भारतीय प्रौद्यो गकी संस्थानों तथा भारतीय वज्ञान शक्षा और अनुसंधान संस्थानों का एक शै क्षक शष्टमंडल मेरे साथ था, मैंने शक्षा वदों तथा वशेषज्ञों से भारत आकर पढ़ाने का आह्वान कया था। मानव संसाधन वकास मंत्रालय ने ग्लोबल इनि शयेटिव ऑफ ऐकेडे मक नेटवर्क्स (ज्ञान) के तहत,केंद्रीय वश्व वद्यालयों से ऐसे प्रख्यात वद्वानों और अनुसंधानकर्ताओं की सूची देने के लए कहा है जिन्हें अति थ वक्ताओं अथवा वद्वानों के रूप में बुलाया जा सके। देश के बाहर तथा अंदर के वद्वानों को अपना ब्योरा लॉग-इन करने की सु वधा देने के लए एक ई-प्लेटफार्म वक सत करने की जरूरत है। यह,यथासमय, भारतीय उच्च शक्षा प्रणाली के लए वैश्विक वशेषज्ञों का एक समृद्ध डाटाबेस तैयार करने में सहायक होगा। हाल ही में शुरू कया गया'पं डत मदन मोहन मालवीय नेशनल मशन ऑन टीचर्स एवं टी चंग' मानक स्था पत करेगा तथा नवान्वेषी शक्षण के लए वश्व स्तरीय सु वधाओं का सृजन करेगा।

6. मैंने वगत वर्ष के सम्मेलन के दौरान सर्वोत्तम वश्व वद्यालय, नवान्वेषण और अनुसंधान के कुलाध्यक्ष पुरस्कार आरंभ करने की घोषणा की थी। यह निर्णय लागू कर दिया गया है और मुझे आज की शाम ये पुरस्कार प्रदान करने पर प्रसन्नता होगी। वे निकट भ वष्य में हमारे वश्व वद्यालयों में अनुसंधान और नवान्वेषण प्रोत्साहन में प्रेरक शक्ति बनेंगे।

मत्रो,

7. सूचना और संचार प्रौद्यो गकी नेटवर्कों का कारगर उपयोग करने की तत्काल जरूरत है। राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के माध्यम से मैंने आपके वश्व वद्यालयों के संकाय सदस्यों और वद्या र्थयों के साथ वी डयो कान्फ्रें संग के जरिए तीन बार संवाद कया। 19 जनवरी, 2015 को जब मैंने नव-वर्ष का संदेश दिया तो 120 उच्चतर शक्षण संस्थानों को राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क तथा अन्य 900 स्थलों को वेबकास्ट के माध्यम से जोड़ा गया। मैं मंत्रालय तथा अनुसंधान और शक्षा संस्थानों के सभी प्रमुखों से हमारे देश में उच्च शक्षा प्रणाली की गुणवत्ता के सुधार के लए राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क की सु वधा का प्रयोग करने का आग्रह करता हूं।

8. भारतीय उच्च शक्षा प्रणाली से उत्तीर्ण होकर निकले हुए वद्या र्थयों को वश्व के सर्वोत्तम वद्या र्थयों से प्रतिस्पर्धा करनी होगी। युवा मस्तिष्कों में प्रतिस्पर्धात्मक भावना तथा अपनी मातृ संस्था के प्रति गर्व का ज़ज्बा भरने की जरूरत है। अंतरराष्ट्रीय दर्जे के साथ ही, वश्व वद्यालयों को राष्ट्रीय रैं कंग फ्रेमवर्क पर रेटिंग का परीक्षण करना चाहिए, जिसे शीघ्रता से वक सत करने की जरूरत है।

9. सरकार ने हमारे उच्च शक्षा क्षेत्र में कौशल और उत्कृष्टता बढ़ाने के अनेक कदम उठाए हैं। परंतु मूल्यांकन प्रणा लयों में अंतर के कारण वद्या र्थयों को वश्व वद्यालय प्रणाली में अपने प्रमाण पत्रों की स्वीकृति तथा रोजगार अवसरों को हा सल करने में कठिनाई आती रही है।

10. वकल्प आधारित अंक प्रणाली की पहल से वद्या र्थयों को देश और वदेश के उच्चतर शक्षण संस्थानों में अबाध आवागमन सुनिश्चित होगा। वद्या र्थयों द्वारा अर्जित अंक अंतरित कए जा सकते हैं तथा एक संस्था से दूसरी संस्था में स्थानांतरित होने पर उनके लए ये बहुत महत्त्वपूर्ण होंगे। मुझे बताया गया है 23 केंद्रीय वश्व वद्यालयों ने पहले ही वकल्प आधारित अंक प्रणाली लागू कर दी है। मैं शेष वश्व वद्यालयों से आगामी अकाद मक वर्ष से इस प्रणाली को कार्यान्वित करने पर वचार करने का आग्रह करता हूं।

मत्रो,

11. वश्व वद्यालय समग्र रूप से समाज के लए एक आदर्श होता है। इसकी प्रेरक शक्ति कक्षाओं और अध्यापन से आगे तक जाती है। इसके इस प्रभाव को अ धका धक हित के लए प्रयोग कया जाना चाहिए। केंद्र सरकार ने व्यापक सामाजिक-आ र्थक महत्त्व वाली अनेक पहलें की हैं। स्वच्छ भारत मशनका लक्ष्य 2019 में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती तक भारत को स्वच्छ बनाना है। सांसद आदर्श ग्राम योजनामें समुदाय सहभा गता के जरिए चुनिंदा गांवों के समे कत वकास की परिकल्पना की गई है। मैं आपसे आग्रह करता हूं जैसा क मैंने गत वर्ष राष्ट्रीय प्रौद्यो गकी

संस्थानों से  कया था, आप सांसद आदर्श ग्राम योजना के अंतर्गत कम से कम पांच गांवों को आदर्श गांवों में बदलने के  लए कार्य आरंभ करें।

मत्रो,

12. मेरी अब तक की टिप्प णयों में,मैंने कुछ ऐसे मुद्दों को छुआ है जिन पर आप  वचार- वमर्श करेंगे। हमारे  लए ऐसे उभरते हुए वैश्विक रुझानों को पहचानना भी जरूरी है जो दुनिया भर में उच्च  शक्षा में भारी बदलाव ला सकते हैं। उच्च  शक्षा की बढ़ती लागत तथा  शक्षा र्थयों के बदलते स्वरूप तथा प्रौद्यो गकीय नवान्वेषण के कारण ज्ञान की संस्थाओं के वैकल्पिक मॉडलों का सृजन हो रहा है।

13. भौतिक अवसंरचना तथा शै क्षक सु वधाओं के निर्माण की लागत, शै क्षक और गैर-शै क्षक कर्मचारियों के बढ़ते वेतन ने  वश्व वद्यालय की  वत्तीय स्थिति पर अत्य धक दबाव डाला है। सरकार से प्राप्त नि ध के सी मत होने के कारण, भौतिक अवसंरचना तथा शै क्षक सु वधाओं के सृजन की लागत, ऊंची फीस के रूप में  वद्या र्थयों को भुगतनी पड़ती है।  वश्व वद्यालय जहां पहले नए  वद्या र्थयों को  श क्षत करते थे वहीं अब उन पर संपूर्ण आजी वका के दौरान क र्मयों के प्र शक्षण और पुन: प्र शक्षण का दायित्व आ गया है। ऑक्सफोर्ड  वश्व वद्यालय के एक अध्ययन में अगले कुछ दशकों के दौरान 47 प्रतिशत पेशों के स्वचालन की भ वष्यवाणी की गई है। नवान्वेषण, जहां कुछ रोजगारों को समाप्त कर देता है, कुछ को बदल देता है तथा कुछ नए सृजित करता है, इस लए कार्यबल को अपने कौशल और क्षमताओं को उन्नत और परिष्कृत करने के  लए आजीवन सीखते रहना होगा।

14. बढ़ते हुए खर्च और गतिशील मांग की दोहरी जरूरतों का समाधान ई-सक्षम  शक्षण के व्यापक प्रयोग से  कया जा सकता है। व्यापक मुक्त ऑन लाइन पाठ्यक्रमों, जो पहली बार 2008 में आरंभ हुए थे, से  वद्यार्थी ऑनलाइन व्याख्यान सुन सकते हैं और पाठ्यक्रम सामग्री पढ़ सकते हैं तथा कक्षा में  मलने वाली उच्च  शक्षा की आं शक लागत पर ही उपा ध हा सल कर सकते हैं। युवा उदीयमान प्रतिभाओं के  लए स क्रय  शक्षण का अध्ययन वेब (स्वयं) तथा व्यापक मुक्त ऑन लाइन पाठ्यक्रमों (मूक्स) से उच्च  शक्षा प्रणाली से अध्यापन में तेजी, मांग और प्रवीणता का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। मानव संसाधन  वकास मंत्रालय तथा उच्च  शक्षण संस्थाओं को  शक्षण हेतु प्रौद्यो गकी के प्रयोग से अ धकतम फायदा हा सल करने के  लए वातावरण तैयार करना चाहिए।

15. परिवर्तनकारी प्रौद्यो ग कयों की अपनी समस्या है। उनसे  वद्यार्थी प्रेरक अध्यापकों से व्यक्तिगत बातचीत और  शक्षण,उसके परिणामस्वरूप मूल्यों को ग्रहण करने तथा परस्पर

व्यक्तिगत और संप्रेषण कौशल के लाभ से वं चत हो जाते हैं। समय-समय पर कक्षा परिचर्चा अथवा  म श्रत व्यापक मुक्त ऑन लाइन पाठ्यक्रमों के साथ-साथ ऑन लाइन अनुदेश पारंपरिक अध्यापन के बुनियादी तत्त्वों को बनाए रखने का समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं।

16. चाहे व्यापक मुक्त ऑन लाइन पाठ्यक्रमों के माध्यम से हो अथवा औपचारिक  शक्षा प्रणाली के माध्यम से उच्च  शक्षण संस्थानों को हमारे  वद्या र्थयों में आधारभूत मूल्यों का समावेश करने पर  वशेष बल देना होगा। अब्राहम  लंकन ने कहा था, "एक पीढ़ी का स्कूली कक्षा संबंधी दर्शन अगली पीढ़ी का शासन संबंधी दर्शन होगा।" हमारी सभ्यता ने, बुनियादी मूल्यों के रूप में देशप्रेम, बहुलवाद, सहिष्णुता, ईमानदारी और अनुशासन का समर्थन  कया है। हमारा लोकतंत्र इन मूल्यों पर समृद्ध हुआ है। अगली पीढ़ी को शक्ति के अंतर्निहित स्रोत के रूप में हमारी  व वधता,समावे शता तथा आत्मसात करने की क्षमताओं की पहचान करना सीखना चाहिए।

मत्रो,

17. जब  श क्षत जनसमूह अपने  चंतन और  वचारों की आपस में गुंथी हुई धाराओं से नवान्वेषण की एक नदी तैयार करता है तब समाज सर्जनात्मक उद्यम का रूप लेता है। अध्यापकों को अपनी जिज्ञासा शांत करने,स्था पत ज्ञान पर प्रश्न उठाने, जांच के पश्चात ही  कसी कथन को स्वीकार करने तथा दक्षता प्राप्त करने के  लए  वद्या र्थयों को प्रोत्साहित करना चाहिए। हमारे  वद्या र्थयों में ऐसी वैज्ञानिक प्रवृत्ति आवश्यक है जो उनकी कल्पना को श्रे णयों और कक्षा के दायरे से आगे ले जा सके।  वशेषकर, उनके ऊर्जावान और जिज्ञासु मस्तिष्क को निखारने के  लए पुस्तकों के जरिए अध्ययन और  शक्षण की प्रवृत्ति को समा वष्ट करना होगा। पुस्तकें सामाजिक और सांस्कृतिक अवरोधों को भी तोड़ती हैं। डॉ. एस. राधाकृष्णन ने कहा था, "पुस्तकें ऐसी माध्यम हैं जिनके द्वारा हम संस्कृतियों के बीच सेतु का निर्माण करते हैं।"

मत्रो,

18. केंद्रीय  वश्व वद्यालयों पर भारत की उच्च  शक्षा प्रणाली की रूपांतर प्र क्रया के नेतृत्व करने का भारी दायित्व है। मुझे  वश्वास है  क आपके नेतृत्व में वे इसमें खरा उतरेंगे। मेरी स चव ने पहले ही इस सम्मेलन के प्रारूप के बारे में  वस्तार से बता दिया है। मुझे उम्मीद है  क आपके  वचार- वमर्श से नवान्वेषी समाधान उभरेंगे तथा मैं इन दो दिनों के दौरान आपकी परिचर्चा के परिणामों के प्रति उत्सुक हूं।

धन्यवाद,

जय हिंद!